माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 निर्भय सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर–शिक्षाशास्त्र विभाग,
वी.वी.एम. पी.जी कॉलेज बाह,आगरा

आरम्भिक बाल साहित्य बाल–कविताओं, लोक–कथाओं, लोरियों और खेल–गीत के रूप में था। लोक–कथायें प्रत्येक देश की सभ्यता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का प्रतिबिम्ब होती है। इन्हीं लोक–कथाओं के माध्यम से प्राचीन युग से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक युग तक ही मानव–संस्कृति के विकास की अवस्था के स्पष्ट दर्शन हो पाते है। ये लोक–कथायें मौखिक आदान–प्रदान से एक पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में उपलब्ध होती रही है इसलिए आज तक जीवित है। यद्यपि ये कथाएं अधिकतर बड़ों के लिए ही रहीं परन्तु बालक वर्ग भी इनसे आनन्दित होता रहा है। बच्चों को कभी महाभारत के सरल अंश सुनाकर और कभी रामायण के किन्हीं अंशों को बालोपयोगी बनाकर सुनाया जाता रहा है। यह बात मनोवैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुकी है कि मानव में बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक अनेक प्रकार के बाल साहित्य के अध्ययन की विशेष रूचि रहती है और बच्चों के व्यक्तित्व परइस साहित्य का विशेष प्रभार पड़ता है।

बाल साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों में जनतांत्रिक नागरिक बनने के गुण विकसित होते हैं, उनको अपने अनौपचारिक शिक्षा से स्वतन्त्र, चिन्तन तथा स्वयं निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलबिध के साथ–साथ हिन्दी बाल साहित्य का विद्यार्थियों की भाषा विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह जानने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता ने शोध समस्या को निम्न प्रकार रेखांकित किया है – '' माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन।''

अनुसंधानकर्ता द्वारा समस्या का सीमांकन निम्नलिखित प्रकार से किया गया है।

- प्रस्तुत अनुसन्धानकार्य में आगरा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों को ही लिया गया है।
- प्रस्तुत अनुसन्धानकार्य कक्षा 9 व 10 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत अनुसन्धानकार्य हिन्दी भाषा में प्रकाशित बाल साहित्य तक ही सीमित है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देय हैं।

1. माध्यमिक स्तर पर हिन्दीबाल साहित्य का अध्ययन करने वाले व अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों तथा छात्राओं की हिन्दी भाषा योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अनुसंधानकर्ता ने अपने अध्ययन के लिये निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

1. माध्यमिक स्तर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों तथा छात्रओं की हिन्दी भाषा योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि सर्वेक्षण विधि से किसी भी क्षेत्र की तत्कालिक परिस्थिति की सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के लिये स्तरबद्व यादृच्छिकी प्रतिदर्शन के द्वारा माध्यमिक स्तर के 11 विद्यालयों का चुनाव किया जिनमें 4 बालिका विद्यालय 4 बालक विद्यालय तथा 3 सहशिक्षा विद्यालय हैं। प्रत्येक विद्यालय से कक्षा 9 व 10 में अध्ययनरत् लगभग 10 प्रतिशत ऐसे छात्रों/छात्राओं का यादृच्छिकी चयन किया गया जो नियमित रूप से हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करते हैं। तथा लगभग 10 प्रतिशत ऐसे छात्रों/छात्राओं का यादृच्छिकी चयन किया गया जो नियमित रूप से हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन नहीं करते हैं। इस प्रकार 240 छात्रों का चयन किया गया जिसमें 120 छात्र हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले थे। और 120 छात्र हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन न करने वाले थे। इसी प्रकार 240 छात्रओं का चयन किया गया जिसमें 120 छात्राएं हिन्दी बाल साहित्य का नियमित अध्ययन करने वाली थीं और 120 छात्राएं हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन न करने वाली थीं अतः सम्पूर्ण प्रतिदर्श 480 विद्यार्थियों का था जिसमें 240 छात्र एवं 240 छात्राएं थीं इस प्रकार सम्पूर्ण प्रतिदर्श संरचना को तालिका में दर्शाया गया है।

सम्पूर्ण प्रतिदर्श संरचना

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत्	हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले	हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन न करने वाले	कुल योग
छात्रों की संख्या	120	120	240
छात्राओं की संख्या	120	120	240
कुल योग	240	240	480

अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान में भाषा विकास के मापने हेतुं उत्तर प्रदेश मनोविज्ञान प्रयोगशाला इलाहाबाद द्वारा तैयार हिन्दी योग्यता परीक्षण अनुसंधान उपकरण का उपयोग किया गया है। हिन्दी परीक्षण विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा योग्यता सम्बन्धी ज्ञान हेतु एक वस्तुनिष्ठ विश्वसनीय एवं वैध परीक्षण है। इस परीक्षण में कुल 100 प्रश्न दिये गये है। तथा प्रयोज्यों को सही प्रश्न करने होते हैं। परीक्षण पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न का हल करने के तरीकों को अच्छी प्रकार उदाहरण देकर समझाया गया है। परीक्षा के लिये कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की गई है। परीक्षण में अंकन निम्नवत है–हिन्दी भाषा योग्यता परीक्षण में 100 प्रश्न हैं। गणना हेतु एक सही उत्तर पर एक अंक तथा गलत उत्तर पर शून्य अंक दिये गये हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य में आंकड़ों के अर्थापन तथा विश्लेषण हेतु सर्वप्रथम आंकड़ों का मध्यमान ज्ञात किया गया तत्पश्चात उनका मानक विचलन ज्ञात करते हुए अन्तर की सार्थकता को 5

प्रतिशत व 1 प्रतिशत के स्तर पर देखा गया। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने माध्य, मानक विचलन तथा टी–मान का प्रयोग किया है। शोधकर्ता ने हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले व अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों में तुलनात्मक अध्ययन, सम्बन्धित आंकड़े संग्रहित निम्नलिखित दो सोपानों के अन्तर्गत किया है–

1. प्रथम सोपान के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा योग्यता के सन्दर्भ में सार्थकता के अन्तर का अध्ययन किया है।
2. द्वितीय सोपान के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की हिन्दी भाषा योग्यता के सन्दर्भ में सार्थकता के अन्तर का अध्ययन किया है।

प्रथम सोपान : माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा योग्यता के सन्दर्भ में सार्थकता के अन्तर का अध्ययन

तालिका –1: माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा योग्यता के सन्दर्भ में।

समूह	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी	240	45.12	16.77	6.05 **	
हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन न करने वाले विद्यार्थी	240	35.53	17.63		

0.01 के स्तर पर सार्थक

यहाँ पर सांख्यिकीय मानों के रूप में यह तथ्य स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा योग्यता के विकास में कहाँ तक सहायक सिद्व होता है साथ ही क्या भाषा ज्ञान योग्यता के सन्दर्भ में हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले व अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है ? तालिका संख्या–1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि हिन्दी भाषा योग्यता के सन्दर्भ में हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 45.12 एवं 35.63 पाये गये तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 16,.77 एवं 17.63 पाये गये। यह सभी मान प्रतिदर्श में सम्मिलित विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान योग्यता को स्पष्ट करते हैं। तथा सामान्य वितरण की योग्यताओं की ओर इंगित करते हैं। प्रदत्तों के अवलोकन से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि लिया गया प्रतिदर्श सजातीय है उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट है कि भाषा ज्ञान योग्यता के संदर्भ में हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों के मध्य टी का मान 6.05 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः हम कह सकते हैं कि जो विद्यार्थी हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करते हैं वे भाषायी रूप से अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षाकृ

त अधिक परिपक्व हैं क्योंकि हिन्दी भाषा साहित्य का नियमित अध्ययन करने से विद्यार्थी प्रायः नवीन शब्दों, कहावतों, मुहावरों आदि भाषा व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान से परिचित होते हैं। जिससे उनका भाषायी ज्ञान बढ़ना स्वाभाविक हो जाता है। इस कारण उनमें भाषा योग्यता का स्तर उत्तम पाया गया दूसरी ओर अध्ययन माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा विकास का तुलनात्मक अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्राप्त नहीं हो पाते।

द्वितीय सोपान : माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की हिन्दी भाषा योग्यता के सन्दर्भ में सार्थकता के अन्तर का अध्ययन

तालिका–2: माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की हिन्दी भाषा योग्यता के सन्दर्भ में

समूह	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्र	120	44.25	18.08	0.81	सार्थक नहीं
हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन न करने वाले छात्रायें	120	46.00	15.30		

प्रथम सोपान से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि बाल साहित्य का अध्ययन करने से विद्यार्थियों की भाषा ज्ञान योग्यता का विकास होता है परन्तु प्रस्तुत सोपान में यह तथ्य ज्ञात करने का प्रयास किया है कि क्या इस विकास पर लिंग सम्बन्धी कोई प्रभाव पड़ता है। अर्थात क्या भाषा ज्ञान योग्यता के संदर्भ में बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रो और छात्राओं के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है या नहीं। तालिका संख्या–2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि हिन्दी भाषा ज्ञान योग्यता के संदर्भ में हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वालों छात्रो और छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 44. 25 एव 46.00 पाये गये। यह सभी मान प्रतिदर्श में सम्मिलित छात्रो और छात्राओं के भाषा ज्ञान योग्यता को स्पष्ट करते है तथा सामान्य वितरण वक्र की विशेषताओं की ओर इंगित करते हैं। प्रदत्तों के अवलोकन से यह तथ्य भी स्पष्ट हो जाता है कि लिया गया प्रतिदर्श सजातीय है। उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट है कि भाषा योग्यता के संदर्भ में विद्यार्थियों के मध्यमानों के मध्य यह अन्तर सार्थक नहीं पाया गया है अर्थात हिन्दी भाषा ज्ञान योग्यता के सन्दर्भ में हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं के मध्य टी–मान 0.81 प्राप्त हुआ जोकि सार्थकता के दोनों स्तरों 0.05 एवं 0.01 पर सार्थक नहीं है। अर्थात हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की भाषा ज्ञान योग्यता में अन्तर नहीं है। हम कह सकते हैं। कि भाषा ज्ञान योग्यता लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है तथा हिन्दी बाल

साहित्य का अध्ययन करने से छात्रों और छात्राओं का भाषा ज्ञान सम्बन्धी विकास समान रूप से होता है।

निष्कर्ष

वर्तमान अनुसंधान का प्रथम उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अनुसंधानकर्ता अपने शोधकार्य के अन्तर्गत यह मानकर चला था कि हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान योग्यता के मापन से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के पश्चात यह तथ्य सामने आता है कि हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान योग्यता में सार्थक अन्तर होता है। जब बालक हिन्दी बाल साहित्य के अन्तर्गत कॉमिक्स, जीवनी साहित्य, बाल कहानियाँ, बाल उपन्यास, जासूसी बाल कथायें, बाल पॉकेट बुक्स, बच्चों के नाटक, खेल साहित्य, विज्ञान आदि का अध्ययन करते है तो निश्चित रूप से बालकों के भाषा ज्ञान में विकास होना स्वाभाविक होता है या यह कहें कि बालकों का भाषा से सम्बन्धित व्याकरण के ज्ञान में विकास होना निश्चित होता है।

अतः इस तुलनात्मक अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान योग्यता में सार्थक अन्तर होता है अर्थात् हिन्दी बाल साहित्य का विद्यार्थियों की भाषा योग्यता पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। व्याकरण अनुसंधान का द्वितीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की भाषा योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोधार्थी यह मानकर चला कि हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं के भाषा ज्ञान योग्यता में अन्तर नहीं होता और हिन्दी भाषा ज्ञान योग्यता में अन्तर नहीं होता और हिन्दी भाषा योग्यता मापन से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के पश्चात् भी यही तथ्य सामने निकलकार आया कि हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं के भाषा ज्ञान योग्यता में अन्तर नहीं होता है। हिन्दी बाल साहित्य का अध्ययन करने पर छात्रों और छात्राओं का समान भाषा विकास सम्भव होता है। भाषा विकास पर लिंग का प्रभाव नहीं पड़ता है। भाषा विशेष रूप से एक मानव व्यवहार है और यह मानव क्रियाओं में एक मुख्य भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से बच्चे अपने विचारों तथा अनुभूतियों को नये–नये ढंग से संचालित कर सकते है। भाषा एक सत्त चलने वाली प्रक्रिया है लेकिन इस प्रक्रिया का स्वरूप बच्चो की परिपक्वता से निर्धारित होता है। इस दृष्टिकोण से भाषा विकास का अर्थ यह योग्यता है जो बालक की परिपक्वता के अनुपात में उसे अपने भावों तथा विचारों को दुसरो तक पहुंचाने अथवा दूसरों के भावों तथा विचारों को ग्रहण करने में सहायक होती है। अध्ययनों से यह बात ठोस रूप में सामने आ चुकी है कि बच्चों के भाषा विकास पर औपचारिक शिक्षा के रूप में विद्यालय तथा शिक्षक और अनौपचारिक शिक्षा के रूप में उनकी रूचि व आयु के अनुकूल बाल साहित्य जैसे – कहानी, गीत पहेलियाँ चुटकले आदि का प्रभाव धनात्मक रूप से पड़ता है। जिस विद्यालय तथा शिक्षक और भाषा द्वारा पढ़े जाने वाले बाल साहित्य का स्तर जितना ऊँचा होगा, बच्चों का भाषा विकास का स्तर भी उतना ही ऊँचा होगा।

अतः इस तुलनात्मक अध्ययन का यह निष्कर्ष निकलकर सामने आता है कि हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की भाषा ज्ञान योग्यता में अन्तर नहीं

होता है अर्थात् लिंग का मानव के भाषा ज्ञान सम्बन्धी योग्यता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सन्दर्भ सूची

- कूनरोड, डेबी, हगस, सलेका (1994), यूलिंग चिल्ड्रनस लिटरेचर टू प्रमोट द लेंग्वुएज डेवलपमेन्ट ऑफ माइनरिटी (पृ0 319–332) बोइसे, इडाहोः बोइसे स्टेट यूनिवर्सिटी
- कौल, लोकेश (2005), शैक्षिक अनुसन्धान, की प्रणाली, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड
- ग्रोवर, संतोष (1991), एन एन्वेस्टीगेशन इनटू द स्टेन्डर्ड ऑफ रीडिंग एबिलिटी इन इंग्लिश इन गवर्नमेन्ट एण्ड सेन्ट्रल स्कूल ऑफ देहली, पी–एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र), जमिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय इन बुच (एजु0) फिथ सर्वे ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च वोल्युम–2, (पृष्ठ 750), नई दिल्ली एन0सी0ई0आर0टी0
- डोभाल, कल्पना (1990), हिन्दी बालकाव्य में प्रतीक एंव कल्पना तत्व, दिल्लीः लाइब्रेरी बुक सेन्टर नई दिल्ली : एन0सी0ई0 आर0टी0
- पिल्लाई, एन0 नटराज (2001), कन्सेप्ट एण्ड लेंग्वुएज डेवलपमेन्ट इन ए डाइग्लोसिक सिचुवेशन, यूज ऑफ चिल्ड्रनस लिटरेचर, लिटरेचर, लेंग्वुएज इन इंडिया स्ट्रेन्थ फॉर टुडे एण्ड ब्राइट टुमारों (सम्पादकः एम0एस0 थिरूमलाई), वोल्यूम – 1.4 जून–जुलाई–अगस्त, 2001
- सिपिएलविस्क, जिमः स्टोनोविच, कीथ इ (1992), प्रिडिक्टिंग ग्रोथ इन रीडिंग ऐबिलिटी फ्रॉम चिल्ड्रन एक्सपोजर टू प्रिन्ट, दिस रिसर्च पेपर प्रजेन्टेड एट ए एनुअल मीटिंग ऑफ द अमेरिक एजुकेशनल रिसर्च एसोसिएशन, अप्रैल 2007, 24, 1992, सेन फ्रेंसिक्कों, रिट्राइवड फरवरी 10, 2009 फ्रॉम www.eric.ed.gov/ERICWebPortal/recordDetail?accno=Ed346436
- शर्मा आर0ए0 (2005), शैक्षिक अनुसंधान, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
- शर्मा, एस0 (1993), वर्तमान शैक्षिक परिपेक्ष्य में बाल साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, पी.एच.डी. मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ उ0प्र0
- सिन्धू, आई0एस0 सिन्हा, मंजरी (2008), द स्टडी ऑफ लेंग्वुएज एण्ड कम्युनिकेशन स्किलस ऑफ द प्राइमरी स्कूल स्टूडेन्ट्स, जनरल ऑफ टीचर एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 30 नं. 1 जून 2008 (पृ0 81)